सौगन्ध तेरी ....

माटी के रंग रूप अनेके जिस रूप ढालों उस जैसा, है उसकी यही प्रवृति,
हर बार बिखरें, सौ बार मिटें, बदले स्वरूप, अनेकों रूपों में कटी पिटी,
रही हमेशा अविनश्वर, है उसकी पहचान, चिरस्थापित करे पृथ्वी गरिमा।
कहीं अंगड़ाई लेती रेत, इठलाती यूँ ही बह जाये, खेले आखँ मिचौली,
कभी मिट्टी पहाड़, नदियों में, तो कही पेड़, प्रजाति, वन वनस्पति में।

घरती में रसी बसी, फल फूलों में भरे रंग, फूल हँसें, तो पंखुरियाँ मुस्कारये,
प्रकति लीला है निराली, कभी घूल भरी आंधी, तो कभी हरियाली,
सूरज दमकें तो यह तपे, फिर भी हर गॉव घर लिपें इसी से,
है, खुशबू मिट्टी की निराली, कभी न कम चलन हुआ, इससे बने पात्रों का।
सुराही घड़े का सौंधा शीतल जल, न ही कम हुई मिट्टी गुल्लकों की उम्र,
बाजार आज नरम हुआ कोराना काल में, है गिरी गाज कुमहारों पे भी,

सनेगें हाथ फिर मिट्टी में, लौट आएँगी, इसकी रंगत, दमकें खिलौनें तेरे,
शायद ही भूल सके रेत बने घरादों से, अपना घर देखने का सपना।
न मन छोटा कर, फीका हुआ है, वो हो हल्ला, रंग "दही हॉडी" का,
कल फिर करेगें, हर तीज त्यौहार में घर ऑगन में, दीप प्रज्वलित,
मन्दिर में ईश्वर स्वरूप में विराजमान, मिट्टी मूर्ति न बिन हो पूजा सम्पन्न,
बिन माटी प्रतिभा न हो हवन यज्ञ पूर्ण, "ऑगन मिट्टी" अहमियत हम जानें।

खेत खलियानों की आन-बान व शान, है बनी किसानों की आजीविका स्रोत्र,
मिट्टी कीचड़ से सने पैर दे गवाही, मानव मस्तक है झुकायें,"धन्यहै तूँ"
पॉच तत्वों से बना मानव जीवन, बिन जन्म दिए हमारी जननी है, वों...
जीवन की आपा धापी में क्यों दौड़ रहा तूँ ?ठहर जा..समझो,पहचान लो,
घरती का अनमोल रत्न है यही, सहज लो, बना रहेगा पर्यावण सन्तुलन!
संसार का चक्र ही ऐसा, मिट्टी की गोद में ही चिर शॉति पाओगें।

यूँ ही नहीं है, मिट्टी की अहमिहत व महत्व, जो हर एक प्राणी जानें,
माथें लगाये ,खायें "सौगन्ध" मिट्टी की हमसब, हो नमस्तक देश प्रमुख भी।
समर्पित है, उस "मॉ" को जिसनें हमें जन्म है, दिया.....तुझे सलाम

गीतान्जलि सक्सेना 2022